



नारी शिक्षा में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान

i q'i k, Ph. D.

॥६॥ वृक्षजीव महाराजा आर कॉलेज ऑफ एजुकेशन, शिमला मौलाना पानीपत

Abstract

I e; kud kj Hkkjrh; <kps es i fforu gtrs jgs gA ukjh vud xqkka dk Hk. Mkj gA ukjh I f'V dli v/Mkj शिला है। साँ kj dk dlihz fallnq gA ukjh ds fcuk uo thou dli dkeuk Hkh ugha dli tk I drhA ; g ekuk tkrk gsfd tgka ukfj; k iuth tkrh gsogka nork fuokl djrs gA itphu dky es ukjh ds fcuk dkbl dk; lughfd; k tkrk FkKA thou I kfkh Hkh og Lo; apurh FkKA ml dk thou iwl I jffkr FkKA og dby intk o J}k dli olrq ugh Fk kh vfirq I ekt es mpp LFku iklr FkKA e/; ; k es ukjh dks ?kj vi eku o frjLdkj I guk iMKA og vc ?kj dli pkj nhokjh rd gh I hfer gks xbA e/; dky es ukjh dks onk ds v/; ; uj ; K I s Hkh ofpr dj fn; k x; KA Hkkjr es tc blyke vk; k rkj ukjh dks foftklu cdkuks I s ckj fn; k x; KA og Hkk; k olrq I e>h tkus yxhA effye I ekt es cgq iRuh foog dli iFk Fkha b1 h dky es foftklu I ekt I qkjd ts sjktk jke elgu jk;] Loket n; kun I jLorth egkRek Qyj egkRek xk/kh jfallnuFk Vगोर, केशवचन्द सेन सभी ने नारी के उत्थान हेतु कार्य किया। इस शोध पत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा नारी की स्थिति को सुधारने हेतु उनका नारी शिक्षा में योगदान का विस्तृत वर्णन है। जिससे नारी की fLFkfr es I qkjk vk; KA foftklu idkj dli I kefkd dlyhfr; k का अंत हुआ और 21वीं सदी की शिक्षित नारी के रूप में foftklu ckritiyों, अध्यायिश्वासों तथा मिः; /kjh. kkvds ds mlyyu dk cmM Loket n; kun I jLorth th us mBk; k vif Hkkjrh; 0; olFk es L=h tkfr dks n; ult; fLFkfr I s mBkdj mfpr LFku fnykus dk Hkh iz kl fd; kA mllgus Lkr; kfkl प्रकाश में लिखा है कि पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी इसी प्रकार शिक्षा xg.k djus dk vf/kdkj gA 0; kdj. kJ xf.kr] वेद, धर्म की शिक्षा नारी भी प्राप्त कर सकती है। इससे वह केवल सन्तानोपत्ति, पति और परिवार का पालन और साकु को शिक्षित करना ds I kf&I kfj ?kj ds ckqj ds dk; k dks djus es Hkh n/fkrk qkfl y dj ik, xhA



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

iLrkouk&

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म उस समय हुआ जब देश में चारों ओर राजनैतिक अराजकता Qsyh gþz Fkh vkg 'kkl doxzl eþ vk, fnu "KM; = gkrs j grs FkA Hkkj rh; /ke] | Ldfr , o@ i j Ei jk dk हनन हो रहा था। ऐसे समय में जनता का मार्ग दर्शन करना अत्यन्त आवश्यक था।

Lokeh n; kuhn us vi us dk; k̄l̄ s turk dh ykdzī rk gkf y dhA os fgUhw /kez l̄ s l̄ EcfU/k̄r
Fk̄ fdUrq fgUhw 'khn muds fy, /kez dk | krd u gkdj tkfr dk | krd FkkA mudk ekuuk Fkk fd
Hkkjr eejgus okyki R; sd bUu ku Hkkjr h; ga

लोकहृन; कुल्हन फूलहृन् ओ। लड़फर दस। एफ़क्स फ़ा। लड़र दक्ष हक्कजूर्ह। लड़फर दक्ष ओगु द्युस
वाली भाषा मानते थे। हिन्दी को उच्च शिक्षा के माध्यम के लिए सही मानते थे। उनका शिक्षा की शक्ति
में अटूट विश्वास था। वे शिक्षा को व्यक्ति के विकास का मूल आधार मानते थे। उनका मानना था कि
— यदि देश का चहमूखी विकास व उत्थान करना है तो याद रहे कि देशका कोई भी बालक व

बालिका निरक्षर ना रहे। वे देश की शैक्षिक दुर्दशा देखकर आहत हो जाते थे। देश में व्यापक नारी fuj {kj rk dks Hkkj rh; k ds i ru dk मुख्य कारण मानते थे। इसलिए उन्होंने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे मानते थे कि नारी को इस प्रकार शिक्षा दी जाए ताकि उसकी बुद्धि का विकास हो सके, ekufi d 'kfDr c<+I d{ pfj= dk; e jg I ds v{k og vi us i {k i j [km gks I dA ukjh ds i fr विश्वास, श्रद्धा व नम्रता होनी चाहिए। उनका उद्देश्य नारी जाति के सूखे वृक्षों को हरा-भरा करना था।

mUgkus Øfr dh vi {kk I {kkj ds ekx{ dks vi uk; kA bl dk; l ds fy, mUgkus onk dh I gk; rk yhA mUgkus cky foog dk i {k fojk{k fd; k rFkk i {k foog dks Lohdfr i nku dhA mudk मानना था कि यदि नारी अशिक्षित होगी तो कोई भी कार्य नहीं कर पाएगी। इसलिए नारी को सभी प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने ब्रह्मचार्य पर cgr cy fn; k gA os dgrs Fks fd tc rd ckyd o ckfydk cgkpkj h o cgkpkfj. kh jg I d{ j gA

Lokesh n; kun ds fopkj ka dks ; fn x{kj rk I s ns{kk tk, rks ; gh Kkr gksrk g{ fd Hkkj r ds पतन और अवनति का एक प्रमुख कारण स्त्रियों की अशिक्षा हैं इसलिए प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि अपने समस्त ज्ञान को नारी में समान रूप से वितरित कर दे। स्त्री शिक्षा से gh fgUnw tkfr dk fodkl I EHko gA okLro e; ; fn ge or{ku fopkj /kkj k ds i {kko dks cny I d{ rks turk e; fQj ml पुरातन, श्रद्धा के जागृत होने की आशा की जा सकती है। श्रद्धा, आत्मबल, आत्मविश्वास जगाने का उपाय केवल यही है कि प्रत्येक युवक व युवती को सुशिक्षित तथा सा॒ Ldr fd; k tk, A

Lokesh n; kuhn ds vu{ k] Boreku dh d{; k, a gh Hkfo"; dh ekrk, a , o{ tuuh gksx{A b L=h शक्ति की सजीव प्रतिमा है। शिक्षा द्वारा ही स्त्रियों की प्रत्येक समस्या का समाधान हो सकता है। आधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों की शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षित व धार्मिक माताओं के ?ij gh egki # "k tle yrs gA ukjh dh mUfr I s Kku ' वित तथा संस्कृति का सम्पूर्ण देश में tkxj . k gks tk, xA

Lokesh th dgrs Fk, "सुशिक्षित व सचरित्रवान नारियाँ शिक्षा का कार्यभार अपने ऊपर लें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु गाव व शहरों में शिक्षा प्रसार केन्द्र खोलकर इसका प्रचार करें व निष्ठावान उपदेशिकाओं के द्वारा देश में स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार सम्भव होगा। सच में स्वामी दयानन्द भारत के महान, लोकप्रिय शिक्षक थे। उनकी शिक्षा व्यक्तिगत ही नहीं अपितु सामाजिक भी थी। वे संस्कृt ds egku fo}ku v{k tu I ekt ds i frfuf/k FkA v{jfon ?kksk ds vu{ k] BLokehi n; kuhn fn0; Kku ds सच्चे सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाले योद्धावीर मनुष्यत्व व संस्थाओं का शिल्पी तथा i dfr }kjk v{kRek ds ekx{ e; mi fLFkr dh tkus okyh ck/kv{k dk ohj & fo{r{k Fkka b

19वीं सदी के अंधकारमय युग को अपने वैदिक ज्ञान की रोशनी से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रकाशवान कर दियां स्वामी दयानन्द वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नारी शिक्षा के लिए आन्दोलन **pyk; k] yksks dks bl ds i fr tkxr fd; kA ukjh dks vi us vf/kdkj ks ds i fr tkx: d fd; kA os Hkkj r dks , s k jk"V^a cukuk pkgrs Fk] tgka ukjh dks gj i dkj l s i # "kks ds l eku vf/kdkj i klr gkA** पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति को छोड़कर लोग अपनी सभ्यता और संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानें और उसके i plkj i k j e s vi uk ; kxnu nA 19oh I nh e s dbl l ekt l fkkj vklUnksyu gq rFkk l kekftd संस्थाएं स्थापित हुई। अनेक समाज सुधारकों ने भारत में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों व अंधविश्वासों dks nj dj us dk chMk mBk; kA bu l Hkh e s Lokeh n; kuhn l jLorh Hkh , d l ekt l fkkj d ds : lk e s mHkj dj l keus vk, vks vksitks ds 'kksk.k l s xfl r 'kkl u dks pukfhi nhA Lokeh n; kuhn us Hkkj r में फैले ब्राह्मणवाद, रूढ़ीवादी विचारधारा तथा अंधविश्वासों के खिलाफ अपने जीवन का बहुत सारा समय अर्पित कर दिया। उन्हें नारी की दयनीय दशा देखकर बहुत दुख होता था। उनके साथ पशुओं ds l eku 0; ogkj fd; k tkrk FkkA og ?kj dh pkj nhokjh e s cln jgrh Fkh vks i nkz i Fkk ds dkj .k उसे किसी प्रकार के समारोह में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। वह न तो शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं vks u gh vll; i dkj ds dk; k e s gkFk c/k l drh FkhA ml s dpoy ?kj e s gh jgdj dke dj us dh Nw FkhA mudk ekufi d] 'kjk hfj d] ckf/kd 'kksk.k fd; k tkrk FkkA ml l e; vud i dkj dh सामाजिक कुरीतियों ने देश में अपना जाल फैला रखा था। स्वामी दयानन्द ने स्त्रियों को शिक्षित कर muds l kekftd Lrj dks l fkkj us dk i z kl fd; kA cky foog tS h djkfr ds dkj .k Nkvh&Nkvh yMfd; ks dh 'kknh Nkvh mez e s dj nh tkrh FkhA tc yMfd; ks dh vk; q [ksus dh gkrh Fkh rks ml l e; mUg s foog ds cl/kuks e s ckf/k fn; k tkrk FkkA Nkvh vk; q gksus ds dkj .k og 'kknh tS s l kekftd dr; dks l e> ugha i krh FkhA bl l s muds Hkfo"; i wkl foj ke yx tkrk FkkA bl h dkj .k dbl yMfd; ks Nkvh vk; q e s gh cky fo/kok gks tkrh Fkh ft l l s muds l kjk thou fo/kok ds : lk e s d"Vks dks l grs gq fcrkuk i Mfk FkkA l ekt e s fo/kokvks dks cMh ghu nf"V l s ns[kk tkrk FkkA mUg s fd l h i dkj dh vktknh ugha FkhA l ekt e s muds fy, cMf dBkj fu; e cuk; s x; s FkA ftudk mUg s i kyu djuk i Mfk FkkA mUg s nkckj k 'kknh dj us dh Hkh eukgh FkhA mUg s fd l h Hkh /kkfeld dedk. M rFkk jhf&fjokt e s 'kkfey ugha fd; k tkrk FkkA R; k gkj ks rFkk l ekj gks e s l feefyr gksus dk Hkh उन्हें अधिकार नहीं था। उन्हें अपशंगुनी कहकर पुकारा जाताथा। नारी की स्थिति दिन-ब-दिन दयनीय gkrh pyh xbA Lokeh n; kuhn fo/kokvks dh l eL; k dk e s y dkj .k cky foog dks ekurs FkA mUg s fo/kokvks ds i pfoog dk l eFku Hkh fd; kA Hkkj rh; l ekt e s i nkz i Fkk tS h djkfr Hkh i pfYyr FkhA bl i Fkk के कारण उनकी शिक्षा का अधिकार भी उनसे छीन लिया गया। D; kfd i <us ds fy,

पाठशाला जाना पड़ता था। लेकिन स्त्रियों को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। जिनके कारण उन्हें शिक्षा की सोच गति में विकास नहीं हुआ।

भारत में स्त्रियों को अशिक्षित रखा जाता था। उसे किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। उसकी स्थिति शिक्षा के अभाव में दीन-हीन होती जा रही थी। उसे अपने अधिकारकों द्वारा उग्र फैला और इसके लिए एक ऐना है कि जब खबर फैला मिलता है तो एक ऐना नियम लाया जाता है।

bl : f<eknh Hkj rh; I ekt e[॥] Lokeh n; ku[॥]n I jLorh us vi uk Økrdrkj[॥] dne mBk; KA
स्वामी दयानन्द ने स्त्रियों को एक गृहणी और गृहस्थी की खुशियाँ ds i[॥]kkv vkJ; Is I Eekfur fd; KA
mudk ekuuk Fkk fd ekrRo L=h dk i[॥]kkv dk; Z gA ml dk i[॥]kkv dRk[॥]; i fr ds i fr I ei[॥]k ekuk
x; k gA bl i[॥]dkj Lokeh n; ku[॥]n us L=h dks ,d i Ruh ds : lk e[॥] ns[॥]kkA ukjh dks mPp LFkk
fnykus grq i[॥] kl vkJ Ekk dj fn; A Lokeh th us dU; kvk[॥] ds egRo dks yksk[॥] ds I keus j [kkA mlgkus
बताया कि नारी के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यदि हम एक स्त्री को शिक्षित
करते हैं तो उससे एक परिवार के साथ-साथ पूरा समुदाय, समाज व राष्ट्र शिक्षित होगा। माता-पिता
nkuk[॥] feydj vi uh I Urku dks I Hkh xqk[॥] Is i fji w[॥] cuk I drs gA ; g dke vdsys i # "k ugh[॥] dj
I drkA

नारी शिक्षा एवं आर्य समाज& नारी को शिक्षित करने के लिए तथा विभिन्न सामाजिक
djhfr; k dks nj djus gry Lokeh n; kurn I jLorh us iz kl fd; A mlgkus cEcbl e ^vk; l ekt*
dh LFkki uk dhA tks Lokeh th ds fu; ek o fl }kUrka ds vuq kj dk; l dj rh FkhA vk; l ekt rFk
Lokeh n; kurn I jLorh us ykxk dks txg&txg tkdj l Hkk, a vk; kstr dj tkx: d fd; kA ukjh
की शिक्षा के प्रति उनमें जागृति उत्पन्न की। उनकी यह धारणा थी कि जब तक स्त्री जाति को पुरुष
के समान शिक्षित नहीं किया जाएगा तब तक उससे समाज में किसी योगदान की अपेक्षा नहीं की जा
सकती। स्वामी दयानन्द ने स्त्रियों व पुरुषों की शिक्षा को एक महत्व दिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा के विचार
ml l e; ifrikfnr fd; stc mudk ?kj l sckgj tkuk Hkh vPNk ugha ekuk tkrk FkkA mlgkus ukjh
के महत्वों का गुणगान किया। स्वामी दयानन्द ने देश में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों dk HkkMk&QKM+fd; kA
उनके द्वारा पड़ने वाले बुरे प्रभावों को देश के लोगों के सामने उजागर किया। देश को एक ऐसी दिशा
प्रदान की जिससे देश की तरकी हो, उसका विकास हो तथा वे उन्नति के शिखर पर चलने लगे।
वैदिक शिक्षा की ओर भारतीयों का ध्यान आकर्षित किया और वेदों का प्रचार प्रसार किया। लोगों को
bl ds egRo dh tkudkjh nhA ofnd ukjh dh Nfo ykxk ds l keus j [khA ft l l s ukjh dks ; K e
cBu iitk i kB dju 'ykxk dk mPpkj .k dju dk vf/kdkj ikl gks x; kA Lokeh n; kurn I jLorh

के देहान्त के बाद उनकी शिक्षाओं पर आधारित 1886 ई मि. -oh- dkyst ykgkj dh LFkki uk dh गई। इसके बाद देश के विभिन्न हिस्सों में अनेक डी. -oh- efgyk egkfo | ky; का dh LFkki uk dh xbA जिनसे स्त्रियां उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हुई। स्त्रियों का अब हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का vol j iklr gmkA vk; z l ekt } kjk [kksys x, Ldly rFkk dkyst का e mlugj gj i dkkj ds fo"k; का dh जानकारी तथा शिक्षा प्रदान की जाने लगी। कहीं-कहीं तो उन्हें निःशुल्क शिक्षा भी दी जाती थी। जिन लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी उनके बालक-बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा, भोजन तथा Nk=kokl dh l fo/kk mi yC/k FkhA vk; z l ekt } kjk LFkkfir dU; k fo | ky; का egkfo | ky; का rFkk विश्वविद्यालयों का जाल सारे देश में फैला हुआ gA tgka mlugj 0; kdj .k] 0; k; ke] /kufo | k] चिकित्सा-विज्ञान, गणित, भूगोल, विज्ञान, वैदिक शिक्षा प्रदान की जाती है। स्वामी जी मानते थे कि नारी को शिक्षा इस प्रकार दी जानी pkfg, ft l s ml dk pfj= dk; e jgj cf} dk fodkl jgj ekufi d 'kfDr c<+vkj og vi us ijk i j [kMh gks l dA Lokeh th ds fopkj का dks ; fn xEHkhj rk l s देखा जाए तो पता चलता है कि भारत के पतन और अवनति का एक प्रमुख कारण स्त्रियों की अशिक्षा gA orjeku dU; k, a gh Hkfo"; dh tuuh gA L=h 'kfDr dh ifrek gA fL=; का dh iR; d l eL; k dk l ek/kku l hko gA अधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों को सीखना होगा। शिक्षित व /kkfed ekrkv का ds ?kj gh egki #k tle yrs gA ukjh dh mlufr l s l dfr] Kku] 'kfDr vkj HkfdR का देश में जागरण हो जाएगा।

bl rjg Lokeh n; kulin I jLorh dk I iuk I kdkj gks x; k vkj muds I i us dks ij k djus dk cgr I kjk J s muds }kjk LFkkfir dh xbz v; z I ekt dh I LFkk dks tkrk gA vkt Hkh mUgha ds i nfplgk को देखते हुए आर्य समाज के कार्यकर्ता उनके उपदेशों, नियमों व सिद्धान्तों का प्रचार i k j dj jgs gA ukjh dh fLFkr i gys ds edkcy s cgr vPNh gks xbz gA pkgs Lokeh n; kulin I jLorh gekjs chp ugha jgs fdUrq mudh fopkj /kkjk] muds fl }kUr rFkk fu; e gekjs chp vkt Hkh विद्यमान हैं। जिन पर चलकर हम अपने देश का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

bl i dkj ; s fu" d" k l fudyrk g fd Lokeh th us नारी शिक्षा पर बल देकर, नारी कल्याण के साथ-साथ समस्त परिवार तथा देश का कल्याण किया। नारी शिक्षा के उद्घोषक स्वामी दयानन्द जी us cM h ohj rk ds | kFk ukjh tkfr dk i u% m}kj fd; kA

I UnHkz xJFk I ph
eIV xJFk

vFlobn & ॥ Eik॥ vkj.-jkef vif MCY; ॥ Mh- fgVuj cfyuj 1886
Xon & I k. .k Hkk".k I fgr ॥ Eik॥ , O- eDI ejyj 1890&92]
 वैदिक संशोधन सम्बल पुस्तक 1933-51

सत्यार्थ प्रकाश & Loket n; kulin I jLorh
I gk; d xbfk
vk/fud Hkkjr dk bfrgkI &
vk; II ekt vlf Hkkjr h; jk"Vbkn &
vk; II ekt dk bfrgkI kifke [k. M&
vk; II ekt dk bfrgkI ktkyUkj&1983%
vk; II ekt dk bfrgkI kcykij&1972%
vk; II ekt ds cfynku yjkgard%
vk; II ekt &
vk; II ekt के आदर्श पुरुष (प्रथम खण्ड)
vk; II ekt ds f}oxr egki#% ds thou
vklnkyu rFk iofr; kaAveri jk
vk; II ekt kub/fnYti&1991%
vk/fud Hkkjr dk ikeftd o vkfkd bfrgkI
वर्ष समाज अतीत की उपलब्धियां और भविष्य का प्रश्न
vk/fud Hkkjr dk bfrgkI
vk; II ekt dk bfrgkI Hkkx&1
vk; II ekt YtMe eves/ okY; e&1
vk; II ekt
vk; II ekt , .M bVI fMVDVjy/ ykgfj 1910
vk; II ekt dh mi yf/k; h ub/fnYti
vkVls ck; kxtQh vko n; kulin I jLorh
vk/fud Hkkjr dk bfrgkI
आर्य निर्देशिका
b/Vjeſſ t vko fglh/fon : jkfi; u , .M vllnj uku
fglh/yfMt
इण्डियन एण्ड वर्ड सिवीलाइजेशन
_f/k n; kulin vk; II ekt dh / dfr / kfgR; dks nu
n; kulin I jLorh %fgt ykbQ , .M vkbM; kt
VnYti&1978%
n; kulin xbfkelyk kifke [k. M&
n; kulin I jLorh
n elgy oeu , .M vco iatkc / k kbVh vkoj yV
19 / bopjh Vtlu&1992%
n; kulin vlf vk; II ekt egf/k / ekt yjkgard&1988%
n; kulin 'kod
दयानन्द मिशन इन दयानन्द कर्मसूरेशन वाल्यूम-2
f}o; n; kulin
ukjh nizk

vkj-, y- 'kdy
kuifr ik. Ms
IR; driffo / kyadkj
Nktjke fl g
ukeno
Loket vkekulln I jLorh
ia xek id kn mik; {k
nhukulkFk fl }kllrkyadkj

ia देव प्रकाश जी
शिव कुमार गुप्ता
irki fl g
Hkokuh yky Hkkjr h
ch, y- xkoj
bl/n fo / kok; Li fr
ds/ h ; kno
dsMCY; # tkh/
मुन्ही राम
nhukulkFk fl }kllrkyadkj
ds/ h ; kno
दिनेश चन्द्र भारद्वाज
ओमप्रकाश त्यागी

ch-jek 'kkL=h
Mh-i-h fl gky
Jh Hkokuh yky Hkkjr h;

tsVh, e- tkMh
Jh eri jegd ifjaktdkpk; II Loket n; kulin
आचार्य जगदीश विद्यार्थी

अंशु मल्होत्रा
, e, y- Bkdj
nhoku pln
xkdy pln ukjx
जगदीश चन्द्र विद्यार्थी
Jh foHkkLdj / fppnkulln 'kkL=h